6. उपसंहार

वर्तमान युग में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विधा के रूप में विकसित हो चुका है। यह विधा मानवीय संवेदना के अनेक स्तरों एवं स्वरों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की क्षमता रखती है। युग-चेतना और वैचारिक परिवेश से प्रभावित होकर उपन्यासकार रचना के क्षणों में मूलतः संघर्षों और सच्चाइयों से गुज़रता है। उच्च जीवन आदर्शों और मार्मिक जीवन अनुभवों को व्यापक एवं समग्रतापूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में उपन्यास की क्षमता सर्वविदित है। हिन्दी उपन्यास लगभग १२५ वर्षों की यात्रा में समाज में घटित विभिन्न युगीन समस्याओं को सार्थक महत्व देने के साथ-साथ तत्कालीन जीवन के प्रश्नों, जीवन मूल्यों, रिश्तों के बिखरावों, द्वंद्वों और कुंठाओं को यथार्थ रूप में चित्रित करके उनसे मुक्ति दिलाने का प्रयास करता है।

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि प्रकाशस्तंभ भी है जो भटके हुए समाज का मार्ग प्रशस्त करता है। साहित्य समाज को एवं समाज साहित्य को प्रभावित करता है। उपन्यासकार जीवन के व्यापक सन्दर्भों और जीवन की वास्तविकता के विभिन्न पहलुओं से प्रेरणा और शक्ति प्राप्त करता है; कल्पना, कलात्मक कौशल और रचनात्मक सौन्दर्य के आधार पर अपनी रचनाओं में तदयुगीन समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास करता है।

समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में चन्द्रकान्ता एक सुप्रसिद्ध एवं बहुचर्चित लेखिका हैं। आपका जन्म, पालन-पोषण कश्मीर में हुआ और आप कश्मीर की सामाजिक, साँस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक स्थितियों और समस्याओं से भली-भाँति परिचित हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कश्मीर तथा कुछ अन्य सीमावर्ती राज्यों की जनता ने जो नवीन परिस्थितियाँ तथा बदलते जीवन मूल्यों का प्रभाव अनुभव किया, चन्द्रकान्ता ने उन्हें सहानुभूति तथा साहस के साथ अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने उपन्यासों में तत्कालीन राजनीतिक विडम्बनाओं और आतंकवादियों के अत्याचारों की पृष्ठभूमि में उत्पन्न समस्याओं की बड़ी ईमानदारी से चित्रित किया है।

उनकी साहित्यिक रचनाएँ अपने अनुभव का प्रामाणिक दस्तावेज़ होने के नाते उन्होंने मानव जीवन की सरल और सुन्दर घटनाओं को वास्तविकता की सुन्दर माला में पिरोया है। एक सच्चे, सीधे और सक्षम साहित्यकार की भाँति उन्होंने उन स्थितियों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है, जिन्हें उन्होंने स्वयं देखा, परखा और अनुभव किया। उन्होंने अहिंसा, प्रेम और मानवता का समर्थन करके भोगे हुए यथार्थ की पृष्ठभूमि में उदात्त मानवता की खोज की है तथा समय और माहौल की माँग के अनुरूप अपना दायित्व निभाया है। समय के बदलते स्वरूप और उसकी चेतना को ईमानदारी और सच्चाई के साथ अभिव्यक्त करने में उनकी क्षमता सराहनीय है। सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत परिवार में पालन-पोषण होने के कारण उनका व्यक्तित्व आदर्श के धरातल पर और पल्लवित पुष्पित हुआ है।

'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप' नामक इस शोध प्रबन्ध में सात उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिनमें स्त्री स्वत्व के विविध रूपों, स्त्री के युगीन जीवन्त प्रश्नों, नारी मूल्यों, संघर्षों और समस्याओं को अभिव्यक्त करने को प्राथमिकता दी गई है। समसामयिक समाज सुधारवादी विचारधारा उनके साहित्य का मूल स्रोत रही है। चर्चित उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज के विभिन्न जीवन और स्त्री स्वत्व के विविध रूपों के आधार पर स्त्रियों की अनेक समस्याओं का उल्लेख किया है।

जब हम समकालीन स्त्रियों पर नज़र डालते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आज़ादी के बाद स्त्रियों की स्थिति में प्रगतिशील परिवर्तन आया है। बदलती अर्थव्यवस्था में उन्होंने घर चलाने के लिए काम करना शुरू कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने रूढ़िवादिता का विरोध करने लगी है। लेकिन आज भी समाज में स्त्रियों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपने आलोचनात्मक उपन्यासों में लेखिका ने ऐसी अनेक समस्याओं का तार्किक ढंग से चित्रण किया है जिसमें स्त्रियों की समस्याओं, निष्कासित लोगों की समस्याओं, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, बाल विवाह, अंतर्रजातीय विवाह, अंतर्रधर्मीय विवाह की समस्या, आतंकवाद, विदेशाकर्षण की समस्या, अवैध विवाह और प्रेम विवाह के

दुष्परिणामों से पीड़ित स्त्रियों का जीवन आदि को विभिन्न रूपों में उजागर करने के साथ-साथ दहेज प्रथा एवं आतंकवाद को वर्तमान युग की भयानक त्रासदी बताया है। साथ ही लेखिका ने स्त्री को देह अभिमान से मुक्त कर उसकी स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता को मान्यता देने की माँग की है।

स्त्रियों का आज भी हर क्षेत्र में शोषण हो रहा है, लेकिन आधुनिक स्त्रियों ने इसका विरोध करना शुरू कर दिया। वह अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र दिखाई दे रही हैं। वस्तुतः स्त्री चेतना का उद्भव बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दृष्टिगोचर होता है; शिक्षा नारी चेतना का आधार है। शिक्षा के कारण विचारों में आये बदलाव से वह स्वयं निर्णय ले रही है उनको स्त्री स्वावलम्बन और स्त्री स्वतंत्रता के समर्थक के रूप में देखा जाता है। समाज के विकास के लिए यह आवश्यक है कि स्त्री पूर्णतः स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर हो तथा उस पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण न हो। आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से लेखिका ने स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का वर्णन किया है अर्थात उनके सभी उपन्यासों के केन्द्र में स्त्रियाँ रही हैं और स्त्री की हर समस्या से जुड़ी संवेदनशीलता को आधार बनाकर उपन्यास की रचना की है।

'कथा सतीसर', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यासों में कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद के भयानक दुष्परिणामों और स्त्रियों की समस्याओं का निर्भीकतापूर्वक चित्रण दर्शनीय है। 'कथा सतीसर' में डॉ. कात्या न केवल आतंकवादियों को तिमारदारी और खातिरदारी करती है बल्कि आतंकवाद छोड़ने की पक्ष भी लेती हैं। 'बाकी सब खैरियत है' में स्त्रियों की स्वत्वहीनता, रिश्तों के बिखराव और असंवेदनशीलता के कारण मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को दर्शाती है। 'बाकी सब खैरियत है' अधिकतर लेखिका के परिवेश से जुड़ा हुआ है लेकिन अनायास में ही यह दूसरों की हकीकत बन गया। सच्चा साहित्यकार वह है जिसका व्यक्तिगत सत्य समाज का सत्य बन जाता है। 'अर्थान्तर' में कामिनी अपने स्वत्व की तलाश में भटकती है तो 'बाकी सब खैरियत' में पारुल अपने स्वार्थ को मिटाकर सिर्फ ससुराल वालों के लिए जी रही है। 'अंतिम साक्षय' में एक अनाथ स्त्री मीना के जीवन में लाचारी, बेमेल विवाह और विवाहेतर सम्बन्धों के दुष्परिणामों को

अभिव्यक्त किया गया है। मीना अपनी कष्टदायक जीवन से छुटकारा पाने की उम्मीद में जी रही है, वहीं 'अपने-अपने कोणार्क' में कुनी है, जो अपनी सुख-सुविधाएँ त्यागकर अपना जीवन परिवार के लिए समर्पित कर देती है। स्वतंत्र भारत में अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचार और साम्प्रदायिकता की आग के न बुझने से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण 'कथा सतीसर' तथा 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में दर्शनीय हैं।

समीक्षाधीन उपन्यासों में लेखिका ने निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवारों में पनप रही ऊब, बोरियत, घुटन एवं अशान्ति के नेपथ्य में आर्थिक परावलम्बिता, साँस्कृतिक दबाव, सामाजिक मानदण्ड एवं रूढ़ियाँ, धार्मिक पक्षपात आदि के विरुद्ध अपने विद्रोह को कड़े शब्दों में व्यक्त किया है। उन्होंने अपने प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से समान अधिकारों की माँग, अस्तित्व की सुरक्षा, शिक्षार्जन, प्रतिस्पर्धा आदि मुद्दों पर मौलिक विचार व्यक्त कर स्त्री के व्यक्तित्व की गरिमा का खूब समर्थन किया है।

लेखिका के उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता उनका व्यापक सामाजिक परिवेश से जुड़ाव है। चर्चित उपन्यासों में सामाजिक जीवन के क्रमिक विकास को प्रतिबिम्बित कर समाज के सभी वर्गों के लोगों की समस्याओं का बहुत ही सजीव और यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया है। उनका यथार्थवाद मानवातावादी विचारधारा पर आधारित है, जो बृहद सामाजिक धरातल पर भारतीय जन जीवन के कई पक्षों का कलात्मक विश्लेषण करता है। आपके उपन्यास सामाजिक चेतना के नये आयाम एवं क्षितिज भी खोलते हैं जिनका मुख्य आधार मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग है।

बदलते सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं की प्रष्ठभूमि में जाति एवं धर्म से सम्बन्धित विचारों में बदलाव की माँग करते हुए लेखिका ने सर्वहारा वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाने के पक्ष में अपने विचार व्यक्त किये हैं। इन उपन्यासों में बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में मानव-कल्याण हेतु नवीन मूल्यों की स्वीकृति पर ज़ोर दिया गया है तथा सामाजिक प्रवृत्तियों का विशिष्ट ढंग से अंकन हुआ है। एक व्यापक सामाजिक परिदृश्य को लेकर विभिन्न वर्गों के लोगों के सामाजिक जीवन, उनकी समस्याओं और

संवेदनाओं को समग्रता से ग्रहण कर उन्हें यथार्थ रूप में स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति उनकी एक विशिष्ट उपलब्धि है। ग्रामीण प्रान्तों की आर्थिक, सामाजिक और नैतिक उथल-पुथल के परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्र भारत के ग्रामीण प्रान्तों की सामाजिक चेतना और समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है।

उनके सभी उपन्यासों में सामाजिक जागरूकता का साहित्य सिद्ध होता हैं। परिवार सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है और सफल पारिवारिक जीवन की पहली शर्त है समन्वय एवं सामंजस्य, यही दृष्टिकोण उनके सभी उपन्यासों में दिखाई देता है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से परिवार की खुशी, सदस्यों के आचरण और व्यवहार, पारस्परिक प्रेम भाव, संघर्षों को झेलने की क्षमता आदि का चित्रण किया है।

व्यक्तिगत एवं साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश का बहुमूल्य योगदान रहा है। 'अपने-अपने कोणार्क' में अर्थार्जन की अतिरिक्त लालसा के कारण उत्पन्न होने वाली तनावपूर्ण स्थितियों और समस्याओं का बड़ी कुशलता से अंकित किया है और मानवता के आधार पर विवाह संस्था से जुड़ी कई समस्याओं पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं।

पारिवारिक समस्याओं में उन्होंने पति-पत्नी के अवैध सम्बन्धों को उजागर किया है। 'अपने-अपने कोणार्क, 'बाकी सब खैरियत है', 'अर्थान्तर', 'अंतिम साक्ष्य' आदि उपन्यासों में पारिवारिक विघटन को रेखांकित किया गया है। इन उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक रिश्ते काँच के बर्तन की तरह टूट रहे हैं। 'बाकी सब खैरियत है' में पारुल के माध्यम से संयुक्त परिवार की घुटन को उजागर किया गया, वहीं 'अर्थान्तर' और 'कथा सतीसर' में विवाहेतर सम्बन्धों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं के नेपथ्य में स्त्री जीवन में तनाव का यथार्थपरक अंकन हुआ है। 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'कथा सतीसर' और 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यासों में असफल प्रेम से पीडित स्त्रियों का वर्णन हैं।

उनके उपन्यासों में पारिवारिक समस्याओं की पृष्ठभूमि में स्त्रियों के तनावपूर्ण जीवन का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। चन्द्रकान्ता का मानना है कि पारिवारिक विघटन

आधुनिक सभ्यता का अनिवार्य अंग बन चुका है जिसे रोकना असम्भव लगता है। परिवारों की बदलती हुई मानसिकता व्यापक रूप से दिखाई दे रही है और नई पीढ़ी अपने बुजुर्गों पर आश्रित हुए बिना अपना रास्ता खुद बनाने को तैयार एवं इच्छुक है। पीढ़ीगत अन्तराल ने घरों में अलगाव, अकेलेपन और अर्थहीनता के बोझ को बढ़ावा दिया। पुरानी पीढ़ी के संस्कार एवं मूल्य नई पीढ़ी को निरर्थक लगने लगे। 'बाकी सब खैरियत है', 'अर्थान्तर', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'कथा सतीसर' उपन्यास इसके उदाहरण हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था में आस्था और अनास्था के नेपथ्य में उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करते हुए लेखिका ने पारिवारिक स्नेह और सद्भाव बनाए रखने का आग्रह किया है।

लेखिका ने अपने उपन्यासों में इस तथ्य को चित्रित किया है कि देश के स्वतंत्र होने के बाद भी समाज प्राचीन मान्यताओं, अन्धविश्वासों एवं रूढ़ीवादी परम्पराओं से आज़ाद नहीं हो पाया है। 'ऐलान गली ज़िन्दा' है उपन्यास की पात्र अरुन्धती एक धार्मिक व्यक्ति होने के साथ अपने मन में कई अन्धविश्वासों और प्राचीन मान्यताओं के प्रति आस्था रखती है। 'कथा सतीसर' उपन्यास में गंगा के निधन तथा उसके भूत बनकर घरवालों को परेशान करने का उल्लेख हुआ है। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में अवतारे की माँ भी 'जिन्न' में विश्वास करती हैं। 'बाकी सब खैरियत है' में सन्तान प्राप्ति हेतु पाखंडी, साधु-सन्यासियों एवं पीर-फ़कीरों से आशीर्वाद माँगना, मनौती माँगना आदि प्रसंगों का चित्रण किया गया है। लेखिका ने भारतीय समाज में प्रचलित शकुन-अपशकुन की ओर इंगित करते हुए इस बात पर आश्चर्य एवं चिन्ता व्यक्त की है कि आज के वैज्ञानिक एवं बौद्धिक युग में धर्म के प्रति संकीर्ण भावना एवं अन्धविश्वास जैसी बुराइयाँ व्याप्त हैं।

उपन्यासों के माध्यम से समाज में विवाह के अवसर पर दहेज प्रथा की विकराल समस्या का चित्रण किया है। उनके अनुसार दहेज लड़की के परिवार की आर्थिक स्थिति को दुर्बल बना देता है। हालाँकि समाज सुधारकों द्वारा दहेज विरोध का प्रदर्शन किया गया और कानून भी बनाये गए, फिर भी इस स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है। लेखिका ने दहेज

जैसी कुप्रथाओं के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए स्त्रियों के जीवन में विकास का मार्ग को अवरुद्ध करनेवाली पारम्परिक सोच को एक त्रासदी के रूप में अभिवर्णित किया है।

दाम्पत्य जीवन में मीठे और कड़वे अनुभव होते हैं और लेखिका ने इन दोनों अनुभवों को अपने उपन्यासों में दर्शाया है। 'अर्थान्तर' उपन्यास के विजय-कम्मो, 'बाकी सब खैरियत है' की पारुल-विनू, 'अंतिम साक्ष्य' के रमेश-कैलाश, बीजी-बाउजी, 'यहाँ वितस्ता बहती है' के राजनाथ-गौरी, 'अपने-अपने कोणार्क' के प्रद्युम्न-मंदा, 'कथा सतीसर' के केशव-लल्ली, माधव-सोना ऐसे जोड़े हैं जिनके पास वैवाहिक जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं।

आधुनिक काल में स्त्री-स्त्री का ही शोषण कर रही हैं, चाहे वह माता हो या विमाता। स्वार्थ के कारण 'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की पिता अपनी नौकरी पेश बेटी कुनी की शादी नहीं करना चाहता है, तो 'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास की रत्नी खुद को बचाने के लिए समाज के खिलाफ जाकर एक विधवा से शादी कर लेती है। लेखिका ने स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन किया है। आर्थिक परावलम्बन या पराधीनता से मुक्ति की कामना करने वाली स्त्रियों के विकास की राह में रोड़े न अटकाने की माँग की गई है। आर्थिक विषमताएँ किस प्रकार पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों को तोड़ती हैं, इसका उदाहरण 'बाकी सब खैरियत है' और 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यासों में दर्शाया गया है। युगीन आर्थिक वैषम्यों एवं शोषण की प्रक्रिया को एक विडम्बना के रूप में स्वीकार करते हुए लेखिका ने इस विडम्बना के प्रति अपने विद्रोह को प्रतिनिधि औपन्यासिक पात्रों के माध्यम से अनेक रूपों में व्यक्त किया है। 'बाकी सब खैरियत है', 'अंतिम साक्ष्य', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'कथा सतीसर' जैसे उपन्यासों में आर्थिक अभाव के नेपथ्य में परिवार के सदस्यों की समस्याओं को वस्तु बनाकर निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन की त्रासदी को लेखिका ने दर्शाया है।

धर्म अच्छे मूल्यों एवं संस्कारों को विकसित करने के लिए होता है, लेकिन आज धर्म के नाम पर अन्धविश्वास, रूढ़ि-परम्परा तथा धार्मिक कट्टरता दिखाई दे रही है। जो हिन्दु-

मुस्लिम भाई-भाई दूध और चीनी के समान हुआ करते थे, वे आज एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये हैं। विवेचित उपन्यासों के माध्यम से वे धार्मिक कट्टरता को नष्ट कर सहिष्णुता और सद्भाव की भावना पैदा करना चाहती हैं। उन्होंने कश्मीर के निष्कासित लोगों की पीड़ा से मुक्ति की कामना करती है। उन्होंने टूटी हुई धार्मिक आस्था की आवाज़ को व्यक्त करने के साथ-साथ मानवता एवं इन्सानियत के चेहरे को सुधारने एवं संवारने तथा दूसरों के दुखों को ओढ़ने और उन्हें जीने की ताकत देने की कोशिश भी की है। 'कथा सतीसर' और 'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यासों में धार्मिक कट्टरता व्यक्त की गई है। उन्होंने धार्मिक एवं साँस्कृतिक जीवन के विभिन्न आयामों का उल्लेख किया है जिसमें धर्म से जुड़ी पुरानी मान्यताएँ आज के वैज्ञानिक युग में लुप्त या कालबाह्य होती जा रही हैं।

स्त्री पुरुष के पारस्परिक सम्बन्ध को प्रेम कहते है। आज समाज में विवाह पूर्व प्रेम की स्थिति होती है और विवाह के बाद यह प्रेम दाम्पत्य प्रेम के रूप में होता है। चर्चित उपन्यासों में प्रेम की अंतर्निहित भावना को निरूपित किया गया है। आजकल के दौर में प्यार में स्वच्छंदतावादी यानी रूमानियत दिखने लगी है। 'ऐनाल गली ज़िन्दा' उपन्यास में अवतारे और दिव्या का प्रेम सम्बन्ध, 'अंतिम साक्ष्य' में सुरेश और सरोज का प्रेम चित्रण, 'कथा सतीसर' में अफ़सल और विजया का प्रेम, 'अपने-अपने कोणार्क' में कुनी और सिद्धार्थ का प्रेम चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में युवक-युवतियों के बीच प्रेम सम्बन्ध जल्द ही शारीरिक बन जाते हैं।

प्रेम को मानव जीवन का एक अनिवार्य पहलू मानते हुए लेखिका ने उसका वर्णन किया है और उनके अनुसार किशोरावस्था में भावुकता स्वरूप उपजा प्रेम स्थायी भाव प्राप्त नहीं कर पाता है। विवेचित उपन्यासों में इसी वास्तविकता एवं हकीकत को दर्शाया है और जहाँ भावुकता के साथ-साथ विवेक भी है, वहाँ प्रेम सफल होता है। उन्होंने विवाहपूर्व प्रेम और यौन सम्बन्धों के दुष्परिणामों का चित्रण करते हुए प्रेम और विवाह की समस्या को विषयवस्तु बनाया है और इन सभी उपन्यासों में स्त्रियों के जीवन में तनाव का उल्लेख स्पष्ट दिखाई देते हैं। सामाजिक शर्तों की कसौटी पर प्रेम-सम्बन्धों की समीक्षा और

परिवर्तित परिवेशगत सन्दर्भ के अनुसार लेखिका ने विवाह संबन्धी मान्यताओं में बदलाव की माँग की है।

'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'अंतिम साक्ष्य' और 'कथा सतीसर' में अनमेल विवाहों को दर्शाया गया है। बेमेल विवाह अनिच्छा से होते हैं लेकिन कुछ अपवाद भी होते हैं। इसका एक उदाहरण 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास में है, गौरी अपने दुगुने उम्र के राजनाथ से प्रेम करती है और वह शादी के लिए उत्सुक एवं आतुर है। अनमेल विवाह को एक विडम्बना के रूप में दिखाकर लेखिका ने शिक्षार्जन और आर्थिक स्वावलम्बन को इस समस्या का समाधान माना है। समीक्षाधीन उपन्यासों में आर्थिक अभाव के कारण अनमेल विवाह का शिकार बनी स्त्रियों के वैवाहिक जीवन से जुड़े कई प्रश्नों पर विचार-विमर्श की गई हैं।

युगीन राजनीतिक विडम्बनाओं तथा आतंकवादियों के अत्याचारों की पृष्ठभूमि में उत्पन्न समस्याओं का लेखिका ने बड़ी ईमानदारी से रेखांकित किया है। उन्होंने अपने भोगे हुए यथार्थ की प्रष्ठभूमि में उदात्त मानवता की खोज करने के साथ-साथ मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का रेखांकन और तत्कालीन समस्याओं का अध्ययन कर उन्हें मानवीय सन्दभों से जोड़ा है। इन उपन्यासों में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज पर राजनीतिक विसंगतियों, आर्थिक विडम्बनाओं और आतंकवादी गतिविधियों के प्रभाव को दर्शाया गया हैं।

कश्मीर में आतंकवादियों के अत्याचार और बलात्कार की शिकार बनी स्त्रियों के प्रति अपनी संवेदना एवं सहानुभूति प्रकट करने के साथ-साथ आतंकवादियों के अत्याचारों की पृष्ठभूमि में कश्मीरी स्त्रियों की आर्थिक समस्याओं को दर्शाया गया है। 'कथा सतीसर' में आतंकवाद के कारण बेदखली का दंश झेलकर अपनी ज़मीन-जायदाद त्यागने को अभिशप्त कश्मीरी पंडितों और बहू-बेटियों की इज्जत लूटने वाले आतंकवादियों के जीवन में उत्पन्न होने वाली आर्थिक एवं स्त्री सम्बन्धी समस्याओं का वर्णन की गई हैं।

चर्चित उपन्यासों में चित्रित अशिक्षित स्त्रियों की स्थिति और भी दयनीय है। शिक्षा के अभाव के कारण विद्रोह के स्थान पर निष्क्रियता की ओर झुकते नारी पात्रों की आलोचना

वर्तमान समाज में अशिक्षित नारी की वास्तविक स्थिति का द्योतक है। समीक्षाधीन उपन्यासों में शारीरिक और मानसिक शोषण का शिकार बनने की मजबूरी की पृष्ठभूमि में इन महिलाओं की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है।

लेखिका की चिन्ता, सृजनधर्मी आस्था और स्त्री स्वत्व के विविध रूपों की सजगता इन उपन्यासों की विभिन्न घटनाओं, पात्रों के क्रिया-कलापों, संवादों एवं द्वन्द्वात्मक व परिस्थितियों के माध्यम से व्यक्त हुई है। हरेक पात्र का नियोजन बड़ी कुशलता से चुना है, तथा सभी छोटे-बड़े पात्र अपनी-अपनी भूमिकाओं में अत्यन्त सार्थक और अनिवार्य सिद्ध हुए हैं। पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व कर रहे है अथवा वर्ग या समूह का, उनकी उपस्थिति उपन्यास को एक विशिष्ट सार्थकता से प्रदान करती है। उपन्यासों में पात्रों की भरमार नहीं होती तथा 'संवाद' पात्रानुकूल और कथा के अनुरूप है। कथा को गति देने, चरित्रों का उद्घाटन करने तथा पात्रों के अंतर्द्वन्द्व एवं विचारों को स्पष्ट करने के लिए सशक्त संवाद का प्रयोग किया है। उनके साहित्य में अनेक घटनाओं का आयोजन कथोपकथन के माध्यम से ही होता है। ऐसे स्थानों में घटनाओं के अनेक दृश्य सजीव, सुन्दर उपयुक्त हो उठे हैं।

चरित्र-चित्रण में माहिर चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यास के लिए समाज के शोषित वर्ग के पात्रों का चयन किया है। अभिशप्त स्त्री को उन्होंने अपनी पात्र योजना में स्थान दिया है। इस प्रकार के पात्रों का चरित्रांकन करने में उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। प्रत्येक उपन्यास के पात्र वर्गगत श्रेणी के हैं, किन्तु कुछ पात्र मौलिक चरित्र सम्पन्न व्यक्तिगत कोटी के भी उपस्थित किये गए है। अधिकांश उपन्यासों में लेखन आत्मव्यंजन या अन्य पुरुषात्मक शैली में किया है, किन्तु पत्र-शैली का भी उपयोग हुआ है। 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास में पत्र शैली का उपयोग दिखाई देता है।

शैल्पिक सिद्धियों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि वे शिल्प के स्तर पर एक सिद्ध हस्त कलाकार है। उपन्यासों में शिल्प पर विचार करते हुए यह स्पष्ट हुआ है कि संरचना के दृष्टि से उपन्यासों की बनावट और बुनावट प्रभावी की गई है। उनमें कहीं भी

अनावश्यक फैलाव या स्फीति नहीं है। यही कारण है कि उपन्यासों में प्रयुक्त प्रत्येक घटना पूरी सार्थकता के साथ, मूल घटना से सहज सम्बन्ध बनाए रखती है। 'कथा सतीसर', 'अपने-अपने कोणार्क', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है' जैसे बृहत उपन्यासों में भी बनावट और बुनावट कहीं भी शिथिल नहीं पड़ती। पाठक निरन्तर अपनी उत्सुकता को सजग और सचेत बनाए रखता है। कथानक में रोचकता, कौतूहल, सजीवता एवं सूत्रबद्धता, मार्मिकता और प्रतीकात्मकता के प्रसंग आए हुए हैं तथा घटनाक्रम का नियोजन शृंखलाबद्ध बना रहता है। इन शिल्पागत विशेषताओं से जहाँ एक ओर उपन्यासों की संरचना का कलात्मक स्तर पर सिद्ध हुई है वही दूसरी ओर उनका आकर्षण और प्रभाव भी बढ़ा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि चन्द्रकान्ता बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं; जो एक जागरूक कलाकार हैं, उन्होंने व्यक्ति के बाह्य एवं आन्तरिक जगत की सभी समस्याओं के आकलन को अपने साहित्य में स्थान दिया है। उनका साहित्य समकालीन युग की संवेदना का सफल अभिव्यंजना है जिसका मूल्यांकन इस प्रकार किया जाता है कि उनका साहित्य सामाजिक और राजनीतिक जीवन का एक ऐसा चिन्तानात्मक कोश हैं, जिसमें समाज और राजनीति के प्रतिबिम्बित शब्द ही नहीं उसका स्पंदन भी अंकित है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विभिन्न रूपों, समस्याओं एवं परिस्थितियों में विभिन्न परिवेश के प्रभाव का चित्रण किया है। 'कथा सतीसर', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'अपने-अपने कोणार्क', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'अंतिम साक्ष्य', 'बाकी सब खैरियत है' और 'अर्थान्तर' में लेखिका ने स्त्रियों के स्वत्वों के विविध रूपों एवं विभिन्न परिस्थितिवश समस्याओं का यथार्थपरक अंकन किया है।

आज स्त्रियाँ पारम्परिक मूल्यों की बजाय नए मूल्यों को स्वीकार करने में सक्षम हो गई हैं। शिक्षा के माध्यम से उन्होंने उन मूल्यों के खिलाफ विद्रोह करने की क्षमता और ताकत हासिल कर ली है जो उनकी स्वतंत्रता के उद्देश्य को प्राप्त करने में बाधा डालते हैं। अपने उपन्यासों के माध्यम से गलत रास्ते में चलनेवाले आधुनिक स्त्री का खुला चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत करते है। इन सारी स्त्री पात्रों के स्वत्वों एवं चरित्रों का अध्ययन करके

मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि आधुनिक स्त्री जागरूक है और अपनी स्वत्व को पहचानती है साथ ही आनेवाली पीढ़ी को स्पष्ट संकेत देना चाहती है कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने केलिए और तुरन्त सफलता प्राप्त करने केलिए हमें कभी भी अपनी नैतिक मूल्यों की तिलांजलि नहीं देनी चाहिए क्योंकि सुखद भविष्य की कल्पना उदात्त जीवन मूल्यों के पालन और निर्वाह में ही है। चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में प्रतिपादित हरेक स्त्री पात्र अपनी स्वत्व को पहचानकर उसे बनाए रखने की कोशिश करती है।

मूल ग्रन्थ सूची

1. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, समय प्रकाशन, ४५९६/ १- ए, दरियागंज, प्र. सं: २००६, दूसरा संस्करण: २०२२, नई दिल्ली-११०००२.
2. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, अमन प्रकाशन, १०४ ए/ ८० सी, रामबाग, संस्करण: २०२१, कानपुर, उत्तर प्रदेश- २०८०१२.
3. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, राजकमल पेपरबैक्स, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दरियागंज, तीसरा संस्करण: २०१५, नई दिल्ली- ११०००२.
4. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, ४६९५, २१-ए, प्रथम (वाणी) संस्करण- २०११, नई दिल्ली-११०००२.
5. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, १- बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, तीसरा संस्करण: २०१९, नई दिल्ली-११०००२.
6. कथा सतीसर, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, १- बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दूसरा संस्करण: २०१६, नई दिल्ली-११०००२.